इकाई 3 अष्ट वसु–एकादश रुद्र

इकाई की रूपरेखा

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय का सामान्य परिचय

3.4 अष्टवसु का परिचय

3.5 एकादश रुद्र का परिचय

3.6 वसुओं तथा रुद्रों की विभूतियाँ तथा उनसे शिक्षा

3.7 सारांश

3.8 पारिभाषिक शब्दावली

3.9 सन्दर्भ ग्रन्थ

3.10 बोध प्रश्न

3.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :–

- आठ वसुओं के जन्म–कर्म तथा विभूतियों का परिचय पाना।
- एकदश रुद्रों के जन्म–कर्म तथा विभूतियों का परिचय पाना।
- इनसे सम्बन्धित कथानकों का ज्ञान पाना।
- इनकी विभूतियों तथा कथानकों से क्या शिक्षा मिलती है यह जानना।

3.2 प्रस्तावना

श्रीकृष्ण गीता के दसवें अध्याय में अपनी विभूतियों का वर्णन अर्जुन को करते हैं। इस अध्याय के श्लोक 23 में कहते हैं ''**रुद्राणा शंकरश्चास्मि**'' अर्थात् ग्यारह रुद्रों में मैं शंकर हूँ। हम इस अध्याय में शंकर जी की विभूतियों तथा उनकी पौराणिक कथाओं से मिलने वाली शिक्षाओं का अध्ययन करेंगे। इसी श्लोक में आगे श्रीकृष्ण कहते हैं– ''**वसूनां पावकश्चास्मि**'' अर्थात् आठ वसुओं में मैं अग्नि हूँ। हम इस अध्याय में अग्नि की विभूतियों तथा उनकी पौराणिक कथाओं से मिलने वाली शिक्षाओं का अध्ययन करेंगे।

3.3 विषय का सामान्य परिचय

ग्यारह रुद्रों के नाम निम्नलिखित हैं :–

हर, बहुरूप, त्रयम्बक, अपराजित, वृषाकपि, शंभु (शंकर), कपर्दी, रैवत, मृगव्याध, शर्व तथा कपाली। (हरिवंश पुराण 1/31/51–52)

ग्यारह रुद्रों के ईश्वर शंकर हैं। अतः श्रीकृष्ण उनको अपनी विभूति बतलाते हैं। शंकर के नेतृत्व के गुणों को आपको सीखना है। जीवन में उतारना है।

आठ वसुओं के नाम निम्नलिखित हैं –

धर, ध्रुव, सोप, अहः अनिता, अनल, प्रत्यूष तथा प्रभास। अनल (अग्नि) वसुओं के राजा हैं। इनको श्रीकृष्ण अपनी विभूति बतलाते हैं। आपको यह पढ़ना है कि अग्नि की कौन सी विभूतियों के कारण वे वसुओं के राजा (नेता) बने? उन विभूतियों को सीख कर आपको अपने जीवन में उतारना है।

वैसे शंकर तथा विष्णु में कोई भेद नहीं है। ऐसा भागवत महापुराण के दसवें स्कन्ध के उत्तरार्ध के अध्याय 63 में आता है। विष्णु पुराण के अंश 5 के अध्याय 33 में इसकी स्पष्ट पुष्टि श्लोक 47 में मिलती है।

3/7 मत्तोऽविभिन्न द्रष्टुर्महसि शंकर।।

श्रीकृष्ण बोले, ''हे शंकर! आप अपने को मुझसे सर्वथा अभिन्न देखें।'' इस प्रकार शिव उपासकों (शैव मत वाले) तथा विष्णु उपासकों (वैष्णवों) में एकता स्थापित वेदव्यास तथा पाराशर ऋषि ने की। इसी को तुलसीदास ने मानस में मजबूत किया।

3.4 अष्टवसु का परिचय

वसु, इन्द्र तथा विष्णु के सहायक देवता हैं। इनकी भूमिका कर्मकांड तथा आशीर्वाद देने की है। ये धन व समृद्धि देते हैं। ये चमकदार हैं।

गुरु वशिष्ठके शाप के कारण इनको मृत्युलोक में जन्म लेना पड़ा था। गंगा नदी के इनके शाप मोचन के लिए नारी रूप धारण किया। हस्तिनापुर नरेश शांतनु के साथ इनका विवाह हुआ। विवाह के समय गंगा ने शर्त रखी कि वह अपनी संतान के बारे में जो भी निर्णय करेगी उस पर पति कोई शंका या प्रश्न नहीं करेंगे। यदि ऐसा हुआ तो वह हस्तिनापुर त्याग कर चली जायगी। शांतनु–गंगा के 7 पुत्र हुए उनको जन्म के बाद गंगा ने गंगा नदी में बहा दिये। इस प्रकार सात वसुओं को जन्म लेने के बाद तुरन्त मुक्ति मिल गई। परन्तु महाराजा शांतनु गंगा के इस व्यवहार से दुःखी हो गये। उन्होंने 7 पुत्रों को जल में डुबा देने का कारण पूंछ लिया तो गंगा ने वचन के अनुसार हस्तिनापुर महल छोड़ दिया। आठवें वसु का जन्म हुआ उसे उसने महाराजा शांतनु को दे दिया। इसका नाम देवव्रत था। वही आगे जाकर महाभारत में भीष्म के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

वशिष्ठमुनि ने वसुओं को शाप दिया इसका कारण था वसुओं द्वारा नंदिनी गौ का बलात् अपहरण कर लेना। आठवें वसु प्रभास ने अपनी पत्नी के दबाव से चोरो में सक्रिय भाग लिया। अतः उनको मानव देह में आजीवन कुंआरा रहने का दंड भोग कर महाभारत युद्ध में स्त्री के हाथों मृत्यु मिलने पर मोक्ष मिला। बाकी 7 वसुओं को जन्म लेने के बाद ही माँ गंगा ने मुक्ति प्रदान कर दी। वसुओं की प्रार्थना पर वशिष्ठमुनि ने उनका देह हल्का कर दिया था।

आठ वसुओं के कामों में विभिन्न ग्रंथों में थोड़ा अंतर है। जैसे घर (धरती) के स्थान पर आप (जरा) लिखा मिलता है। आठ वसुओं के नामों का अर्थ समझने का प्रयत्न आप करिये। इससे आपको उनका महत्त्व भी समझ में आ जायेगा।

1. घर (धरा, धरती, भूमि)। यह सब जगत् को धारण करती है। इसका गुण धैर्य व सहनशीलता है। यह धारण व पोषण दोनों करती है। सहन भी करती है। प्रदूषण जनित विश्व वापन के कारण अति कठोर मौसम को, बाढ़, सूखे, महामारी, युद्ध आदि को।

2. **ध्रुव** : उत्तर दिशा में ध्रुवतारा है जो सदा स्थिर रहता है तथा चमकता रहता है। दिशासूचक यंत्र में ध्रुवतारे की स्थिति के आधार पर दिशा का पता चलता है। विमान तथा जहाज इसकी सहायता से गंतव्य स्थान पर पहुँचते हैं। स्थिरता, चमक व मार्गदर्शन इसके गुण हैं।

3. **सोम** : सोम अर्थात् चन्द्रमा (डववद) से है। यह रात्रि में चांदनी, शीतलता व नमी देता है। अमृत वृष्टि करता है। समुद्र जल पूर्ण चन्द्र को देखकर आनन्द की हिलोरें लेने लगता है। चन्द्रमा विरहीजन को काम पीड़ा देता है। यह सौन्दर्य का मानक है। सुन्दर स्त्री के मुख की तुलना चन्द्र से करके उसे चन्द्रमुखी कहा जाता है। चन्द्रमा वनस्पति तथा औषधियों को वृष्टि देता है।

   वैकल्पिक अर्थ सोम रस देने वाली वनस्पति से है। देवता इसका पान करके स्वस्थ रहते हैं।

4. **अहः (आपः) या जल** : धरती पर जल के बिना जीवन नहीं हो सकता। जल का गुण रस है। इसका कार्य पवित्रता देना है। जल तृषा शांत करता है। जल से ही कृषि, वनस्पति, पशु जीवन, मानव जीवन आदि संभव है। जल बिना उद्योग नहीं हो सकता। जल बिना शहर व गांव नहीं बस सकते। जल बिना यज्ञ व पूजा सम्पन्न नहीं हो सकती। जल परिवहन जल बिना नहीं हो सकता। जल मार्ग बिना व्यापार नहीं हो सकता। जल बिना कृषि सिंचाई नहीं हो सकती। जल बिना वृक्ष नहीं हो सकते। जल के बिना जल विद्युत नहीं बन सकती, नहरें नहीं निकाल सकते।

5. **अनिल (वायु)** : वायु का गुण शब्द व स्पर्श है। वायु मंद सुगंध बहे तो सुख देती है। वायु गर्म (लू) चले तो कष्ट देती है। वायु अनुकूल दिशा में बहती हैं तो वेग देती है। यदि वायु प्रतिकूल दिशा में चले तो गति अवरूद्ध करती है। वायु से पवन ऊर्जा उत्पन्न होती है। वायु प्राणशक्ति का स्रोत है। वायु में बल व शक्ति होती है, गति तथा वेग होता है।

6. **अनल (अग्नि)** : इसका सम्बन्ध सूर्य से है। अग्नि वसुओं का राजा है। अग्नि का गुण ताप व प्रकाश है। अग्नि भी पवित्र करती है। अग्नि से घर की रसोई बनती है। जठराग्नि से खाया हुआ आहार पचता है। अग्नि से कारखानों के बायलर चलते हैं। अग्नि से मट्टी जलती है। अग्नि से चिता जलती है। यज्ञाग्नि आहुति को देवताओं को पहुँचाती है। अग्नि देवों का मुख है। अग्नि शक्ति देती है। अग्नि से शीत दूर होती है। शरीर में तापमान कम हो या बहुत बढ़ जाये तो बीमारी व मृत्यु हो जाती है। वैदिक काल में अग्नि यज्ञ का प्रधानदेवता माना जाता था। अग्नि का जन्म ब्रह्मा के मुख से माना गया है। अग्नि तत्त्व का अवतार दुर्गा व सूर्य है।

7. **प्रत्यय (प्रभात)** : रात्रि के बाद प्रभात या सवेरा होता है। इसका गुण तसेताजा पन या ताजगी है। यह कर्म का उत्साह देती है। जिन पर कर्म करने की ऊर्जा सवेरे या प्रभात से ही मिलती है। सूर्योदय से पूर्व जल्दी उठने वालें को यह लाभ मिलता है। देर से उठने वाले आलस्य प्रमाद, रोग व निर्धनता के शिकार होते हैं। कर्म करने का उत्साह उनमें नहीं होता।

8. **प्रभास (प्रकाश)** : प्रकाश का लक्ष्य ज्ञान है। यह सत्त्वगुण का प्रतीक है। ज्ञान से व्यक्ति सही दिशा चुनता है। अपना धर्म/कर्त्तव्य करता है। अधर्म से दूर रहता है। जीवन में शांति व निर्भयता आती हैं।

वसुओं की कृपा से धन प्राप्त होता है। ये स्वर्ग में देवताओं के साथ रहते हैं। वसु का शाब्दिक अर्थ धन, मधुरता, सौन्दर्य आदि है। वासु का अर्थ एक सुन्दर युवती से है। आठों वसु मिलकर धरती पर जीवन व प्रकृति का संतुलन स्थापित होता है। ये इन्द्र तथा विष्णु के सहायक देवता हैं। ये शरीर व आत्मा के बीच तथा मानव व प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए आवहन कर पूजे जाते हैं।

यदि प्रदूषण फैलाते हैं तो इससे ये नाराज होते हैं। स्वास्थ्य, धन तथा भावात्मक संतुलन के लिए आठ वसुओं का आशीर्वाद होना आवश्यक है। आठ वसुओं की पूजा का सर्वश्रेष्ठ समय धनिष्ठा नक्षत्र का समय है। यह मंगल का नक्षत्र है।

वशिष्ठमुनि के शाप की कथा से यह सीख लें कि गलती करने पर देवता भी दंडित किये जाते हैं। अतः हम सावधानीपूर्वक पाप कर्म से बच कर रहें। अग्नि देव ने महर्षि वशिष्ठको जो उपदेश दिये वे अग्निपुराण में मिलते हैं। उसमें अष्टवसु व एकादश रुद्रों का भी वर्णन मिलता है।

आप आठ वसुओं को इस प्रकार भी समझ सकते हैं कि ये पंचमहाभूत (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश) तथा मन, बुद्धि तथा आत्मा का रूप है। शांति तथा समृद्धि के लिए इनकी पवित्रता आप बनाये रखें। न तो इनको प्रदूषित करे तथा न इनकी बर्बादी ही करें। इनमें से किसी एक का भी अभाव या विकृति मानव अस्तित्व को संकट में डाल देंगे। इनमें से किसी का भी निर्माण करना मानव के हाथ में नहीं है। ये सब परमात्मा की देन हैं। ये निःशुल्क तथा समान रूप से सभी मनुष्यों को उपलब्ध हैं। ये प्रकृति के तत्त्व हैं।

इनका अध्ययन आप अध्यात्म तथा भूगोल व विज्ञान की दृष्टि से कर सकते हैं। वस्तुओं का अधिक ज्ञान आपको बृहदाकारण्यक उपनिषद्(3.9.3), महाभारत तथा वाल्मीकि रामायण पढ़ने से मिलेगा। वसु पर आधारित व्यक्तियों के नाम भी मिलते हैं। यथा वसुदेव, जो श्रीकृष्ण के पिता थे तथा वसुदेव स्वयं श्रीकृष्ण का नाम। वाल्मीकि रामायण अष्ट वसुओं को 12 आदित्यों की तरह ही महर्षि कश्यप तथा अदिति की संतान बताती है। परन्तु महाभारत में आठ वसुओं को मनु या ब्रह्म की संतान बताया गया है।

बृहदकारण्य उपनिषद् के अनुसार आठ वसुओं के नाम हैं। पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल, सूर्य, आकाश, चन्द्रमा तथा नक्षत्र। शपतथ ब्राह्मण में भी ये ही नाम मिलते हैं।

महाभारत में आठ वसु के नाम हैं— धरा, अनल (अग्नि), अनिला (वायु), अपा (जल), प्रत्यूषा (सूर्य), प्रभास (आकाश), सोम (चन्द्रमा), ध्रुव (ध्रुव तारा), श्रीमद्भगवद् गीता महाभारत को अंग होने के कारण ये ही नाम मान्य करती है। वेदोत्तर ग्रंथों में ये ही नाम मिलते हैं। आप को इनके आधार पर ही उत्तर देना है।

विष्णु पुराण में प्रभास को 27 नक्षत्रों के प्रकाश से जोड़ा गया है तथा ध्रुव को आकाश तत्त्व से जोडा गया है। ध्रुव ने अहा की भूमिका ले ली जब अहा के बदले अपा (जल) को शामिल किया गया।

यह भी उल्लेखनीय है कि अष्ट वसु 33 कोटि के देवताओं में शामिल हैं।

3.5 एकादश रुद्रों का परिचय

विष्णुपुराण के अंश प्रथम के अध्याय–5 में रौद्र सृष्टि का निम्नलिखित वर्णन मिलता है:–

''कल्प के आदि में ब्रह्मा अपने जैसा पुत्र पाने का चिंतन कर रहे थे। तभी उनकी गोद में एक नीललोहित वर्ण का बालक आ गया। वह बालक जन्मते जोर–जोर से रोने लगा। इधर–उधर वह दौड़ने भी लगा। ब्रह्मा ने पूंछा, ''तूं क्यों रोता है?'' उसने कहा आप मेरा नाम रखो। ब्रह्मा ने कहा, ''तुम्हारा नाम रुद्र है।'' तूं रो मत। शांत हो जा।'' ऐसा कहने पर भी वह बाल सात बार रोया। तब ब्रह्मा ने उस बालक के सात नाम और रखे। उन आठों के स्थान स्त्री व पुत्र भी निश्चित किये। ये निम्नलिखित हैं :–

रुद्र–	भव	शर्व	ईशान	पशुपति	भीम	उग्र	महादेव
स्थान–	सूर्य	जल	पृथ्वी	वायु	अग्नि	आकाश	ब्राह्मण, चन्द्रमा

आप ध्यान दीजिये कि 11 रुद्रों के स्थानों में अष्ट वसु भी आ जाते हैं। इस प्रकार अष्ट वसु व 11 रुद्र एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। सृष्टि का सृजन–फलन तथा प्रलय एक सिक्के के दो चेहरे हैं।

पत्नियाँ	सुवर्णता	ऊषा	विकेशी	अपरा	शिरा	स्वाहा	रोहिणि दिशा, दीक्षा
स्थान–	शनि	शुद्र	लोहितांग	मनोजक	स्कन्द	सर्ग	संतान, बुध

रुद्र ने दक्ष प्रजापति की कथा सती से विवाह किया। उसने पिता के यक्ष में देह त्याग किया तथा हिमाचल के यहाँ मैना के गर्भ से पार्वती के रूप में पुनः जन्म लिया। उसने भारी तप करके शंकर से विवाह किया।

भागवतमहापुराण के सृष्टि वाले अध्याय में रुद्र सृष्टि का वर्णन नहीं मिलता है।

शिव पुराण के शतरुद्र संहिता में शिव के अवतारों का वर्णन आया है जो निम्नलिखितहैं:– कपाली, पिंग, भीम, विरूपास, विलोहित, शास्ता, अनपाद, अपिर्बुध्य, शंभू, चंड, भव। ये सुरभि के पुत्र हैं।

हनुमान जो देव कार्य हेतु उत्पन्न हुए 12वें रुद्रावतार हैं। शिव के अन्य अंशावतार हैं दुर्वासा, पिप्लाद, वृषभ आदि।रुद्र के बारह अवतार तथा उनकी शक्तियाँ निम्नलिखितहैं :–

रुद्र	शक्ति	स्थान
महाकाल	महाकाली	उज्जैन
तार	तारादेवी	वीरभूम (प.व.)
बाल भुवनेश	बाला भुवनेश्वरी	उत्तराखण्ड में
षोडश श्री विद्येश	षोडशी श्री विद्या	त्रिपुरा में

भैरव	भैरवी गिरिजा	उज्जैन (गिरनाद, गुजरात को भी मानते हैं।)
छिन्न मस्तक	छिन्नमस्ता	झारखण्ड, रांची के निकट
धूमवान	धूमावती	रतिया (म0प्र0)
बगला मुख	बगला मुखी	कांगडा (हिमाचल)
मातंग	पातंगी	झाबुआ में मोढेरा
कमल	कमला देवी	

शिव बारह ज्योतिर्लिंगों के स्थलों पर भी प्रकट हुए इनके नाम निम्नलिखित हैं– सौराष्ट्र में सोमनाथ, श्रीशैल में मल्लिकार्जुन, उज्जैन में महाकाल, ओंकारेश्वर में अमलेश्वर, हिमालय में केदारनाथ, डाकिनी में भीमशंकर, गोमती तट पर त्रयम्बकेश्वर, चिताभूमि में वैद्यनाथ, दारुकवन में नागेश्वर, सेतुबंध में रामेश्वर, शिवालय में धुश्मेश्वर।

11 रुद्रों की पूजा सोमवार को शिव पूजा के साथ ही करने का विधान है। एकादश रुद्रों के भी पृथक मंत्र है। प्रातः काल में उठकर ग्यारह रुद्रों के नामों का जप करना भी सिद्धिदायक है।

अष्ट रुद्रों के राजा अग्नि है। इनके गुण हैं ताप, प्रकाश, पवित्रता तथा देवमुख। ग्यारह रुद्रों के राजा शंकर हैं जो कल्याणकारी हैं। वे भोले भी हैं। भस्मासुर को वरदान देकर स्वयं ही संकट में पड़ गये। बाणासुर को वरदान देकर श्रीकृष्ण के साथ युद्ध करने को मज़बूर होना पड़ा। शिव की पूजा विष्णु के अवतार श्रीराम तथा श्रीकृष्ण ने भी की। शिवालय सर्वत्र मिल जाते हैं।

शैव तथा वैष्णव मतावलंबियों में संघर्ष भी रहा है। इस झगड़े को समाप्त करके एकता स्थापित करने का प्रयास महर्षि पराशर ने विष्णु पुराण में की, महर्षि वेदव्यास ने भागवत में की। आदि जगद्गुरु शंकराचार्य से पंचदेव पूजा पद्धति स्थापित करके हिन्दू समाज को एक करने का कार्य किया। गोस्वामी तुलसीदास ने भी रामचरितमानस में लंकाकांड में निम्नलिखित शब्दों में किया–

शिव द्रोही मम दास कहावा। सो नर सपनेहुं मोहि न पावा।।

शंकर विमुख भगति चहु मोरी। सो नारकी मूढ़, मति थोरी।।

लंका–कांड 1.4

शंकर प्रिय मम द्रोही शिवद्रोही मम दास।

ते नर करहिं कल्प भरि घोर नरक मंहु वास।।

लंकाकांड –2

तुलसी ने उत्तर भारत को दक्षिण भारत से जोड़ने का कार्य निम्नलिखित चौपाई रच कर किया–

जो रामेश्वर दरसनु करिहहिं। ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं।।

समुद्र मंथन के जब कालकूट विष निकला तो उसे दानवों तथा देवताओं ने लेने से मना कर दिया। कालकूट विष को शंकर ने पी कर सृष्टि को विनाश से बचाया। इससे शंकर महादेव कहलाये। शंकर के इस त्याग के कारण वे रुद्रों के राजा/नेता

बनने के लिए सर्वथा योग्य माने जायेंगे।

शंकर ने विवाह भी किया तो भोग–विलास के लिये नहीं वरन् तारकासुर का वध करके सृष्टि की रक्षा करने वाला पुत्र पाने के लिए किया। शिव पार्वती के पुत्र स्वामी कार्तिकेय देव सेनापति बने तथा तारकासुर का वध किया। इस प्रकार शंकर ने सृष्टि की रक्षा की।

शंकर को राम कथा बहुत प्रिय है। वे सती के साथ कुभंज ऋषि के आश्रम में राम कथा सुनने को गये। सीत का वेष सती ने धारण किया उस कथा से उन्होंने सती का परित्याग करने का कठोर निर्णय किया। पार्वती को राम कथा सुनाई। शंकर परम वैष्णव हैं।

जब सती ने पिता दक्ष के यज्ञ में देह त्यागी तो शिव ने कोप करके अपने सेवकों से दक्ष का यज्ञ विध्वंस करा दिया। दक्ष का भी सिर कट गया। जब देवताओं ने प्रार्थना की तो शंकर ने करुणा की। दक्ष का यज्ञ पूर्ण कराया। शिव आशुतोष (शीघ्र प्रसन्न होने वाले) तथा अवढ़र दानी भी हैं। बिना मांगे भी बहुत देते हैं। स्वयं कुछ नहीं रखते, अपने लिए कुछ कामना नहीं रखत परन्तु भक्तों को अपने सेवक कुबेर से बहुत धन दिला देते हैं।

दक्ष ने शंकर की प्रार्थना करते हुए कहा, ''आपने मुझे शिक्षा देकर बड़ा अनुग्रह किया है। आप ब्राह्मणों के रक्षक/पालक है।। आपने आत्म तत्व की रक्षा करने के लिए ब्राह्मणों को उत्पन्न किया। आपकी कृपा से मैं नरक में गिरने से बच गया हूँ।'' (भागवत महापुराण, चौथा स्कन्ध, अध्याय 7)

राजा भागीरथ जब गंगा को स्वर्ग से पृथ्वी पर जा रहे थे तब यह समस्या हुई कि गंगा धरती पर गिरेगी तो उसके वेग से धरती फट जायेगी। गंगा के वेग को सहन कौन करें? तब शिव ने इस समस्या का हल करने के लिए अपनी जटा में गंगा को धारण किया। यह भी शंकर की नेतृत्व योग्य का एक प्रमाण है।

शिव स्वायंभू हैं। अतः उनके माता–पिता नहीं हैं। पार्वती उसकी पत्नी है। गणेश व कार्तिकेय उनके पत्र हैं। गणेश की ऋद्धि–सिद्धि पत्नियाँ तथा शुभ लाभ पुत्र है। ये शिव के पौत्र हैं। नंदी उनके वाहन हैं। वीरभद्र, नन्दी उनके गण हैं। गणों के अधिपति गणेश हैं। शिव परिवार आदर्श परिवार है। परस्पर शत्रुता वाले जीव–सिंह तथा वृषभ, मोर तथा सर्प, चूहा तथा सर्प सब शांति से साथ रहते हैं। यह शिव के नेतृत्व की सामंजस्य क्षमता का उदाहरण है।

शिव के दरबार में सभी का प्रवेश है, देव, दानव, प्रेम, पिशाच, यक्ष, किन्नर, नाग आदि सभी के लिए उनका दरबार खुला है। समय का भी कोई बंधन नहीं है। भांग–धतूरे, आक आदि पुष्प शिव को स्वीकार है। द्वादशी–त्रयोदशी को प्रदोष व्रत होता है। शिवरात्रि को व्रत व पूजा बहुत उत्साहपूर्वक होते है। मानसिक शांति के लिए शिव के 108 नामों का जाप करें। मृत्यु से रक्षा, रोग निवारण आदि के लिए महामृत्युंजय मंत्र के अनुसरण का विधान है। काशी विश्वनाथ काशी में मरने वालों को राम नाम सुना कर मोक्ष देते हैं। मात्र जल व बिल्व पत्र अर्पण से ही शिव शीघ्र प्रसन्न होते हैं।

3.6 वसुओं तथा रुद्रों की विभूतियाँ तथा उनसे विद्या

अष्टवसु प्रकृति के तल हैं। इनके राजा अग्नि की विभूति ताप व प्रकाश है। यह सबको पवित्र करता है। देवों का मुख है। यज्ञ आुति को देवों तक पहुँचता है। प्रत्येक

वस्तु के कुछगण हैं। यथा धरती से धैर्य व सहनशीलता सीखें।

ध्रुव से स्थिरता सीखें। दिशा निर्देश देना सीखें। सोम (चन्द्रमा) से शीतजल व पोषण करना, आनन्द देना सीखें। जल से रस का गुण ग्रहण करें। पवित्र करना सीखें। तृषा मिटाना सीखें। वायु से शबर व स्पर्श गुण ग्रहण करें। आवश्यकतानुसार शांति व क्रोध का प्रयोग करना सीखें। प्रभात की तरह ताजगी व उत्साह से कर्म करें। सूर्योदय से पूर्व उठने की आदत डालें। ज्ञान व सत्त्वगुण की वृद्धि करें। अष्ट वसुओं की तरह धन समृद्धि बढ़ायें।

एकादश रुद्रों का गुण तो क्रोध है परन्तु उसके पीछे कल्याण का भाव दिया है। उनके नेता शंकर की तरह भोलापन, शीघ्र प्रसन्न होना, अवढ़र दानी होना, सबसे समान व्यवहार करना, सबके लिए उपलब्ध रहना, कल्याण करने के लिए त्याग करना व कष्ट भी सहना, अपने लिए कोई कामना न रखना परन्तु अपने सेवकों—भक्तों की सदा रक्षा करना। कल्याण पर ध्यान केन्द्रित करना। एकता व समरसता पर ध्यान देना। दोषी को दंड भी देना। इन सब गुणों को जीवन में उतार कर आप अच्छे बन सकते हैं।

3.7 सारांश

श्रीमद्भागवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अष्टवसुओं में अग्नि को उनका राजा बताया है। एकादश रुद्रों में शंकर को उनका नेता बताया है। दोनों नेताओं को अपनी विभूतियाँ बतलाया है। अष्ट वसु प्रकृति के तत्व हैं जो प्रकृति तथा मानव के बीच संतलन के आधार हैं। अग्नि तेज स्वरूप तथा पावक (पवित्र करने वाला) का तत्व है। इसी से नेत्र ज्योति है, जठराग्नि से पाचक शक्ति है, तापमान से मनुष्य शरीर का अस्तित्व है, अग्नि से भोजन बनता है, अग्नि से कारखाने चलते हैं। अग्नि से यज्ञ कर्म होता है। आहुति देवों की मिलती है। अग्नि की मृत देह का संस्कार करती है। अग्नि की साक्षी से विवाह तथा मित्रता होते हैं। अग्नि का त्याग कर सन्यास लेते हैं। वैसे जीवन अग्नि के बिना नहीं चल सकता है।

एकादश रुद्र क्रोध की मूर्तियाँ हैं। इनके स्थान आठ वसुओं में हैं। क्रोध में भी कल्याण निहित है। शंकर इनके नेता हैं। उनकी विभूतियाँ, त्याग, तपस्या, सबकी पहुँच, शीघ्र प्रसन्न होना, देने में उदारता, दोषी पर क्रोध करके उसे दंड देना तथा पूरा जीवन लोक कल्याण हेतु समर्पित। अपने लिए न कोई कामना रखना न वैभवी स्वामित्व होना। विरोधी तत्त्वों के बीच भी समन्वय तथा संतुलन साधने की क्षमता होना। परम वैष्णव होना।

अष्टवसु भी 33 कोटि देवताओं में गिने जाते है। देवता भी अपराध करें तो उनको भी ऋषि दंड देते हैं। हम मनुष्यों को अपराध/पाप से बचाना चाहिए।

एकादश रुद्र भी 33 कोटि देवताओं में गिने जाते हैं। क्रोध व प्रलय में भी कल्याण की भावना छिपी है जो उनको देवता बनाती है।

अष्टवसु के नामों तथा एकादश रुद्रों के नामों में विविध शास्त्रों में कुछ अन्तर देखने को मिलता है।

3.8 पारिभाषिक शब्दावली

1. अष्ट वसु, 2. एकादश रुद्र, 3. शिव के अवतार, 4. द्वादश ज्योर्तिलिंग, 5. प्रकृति के तत्त्व।

3.9 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. विष्णुपुराण हिन्दी टीका सहित, गीता प्रेस, गोरखपुर
2. भागवत महापुराण, हिन्दी टीका सहित, गीता प्रेस, गोरखपुर
3. जयदयाल गोयन्दका : श्रीमद्भगवद् गीता– तत्त्व विवेचनी टीका, गीता प्रेस, गोरखपुर।
4. संक्षिप्त शिवपुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर, वि0स0 2080 संस्करण
5. बृहदारण्यक उपनिषद्, गीता प्रेस, गोरखपुर
6. महाभारत, हिन्दी टीका, वाल्यूम–4, हरिवंश पुराण सहित, गीता प्रेस, गोरखपुर
7. अग्नि पुराण, हिन्दी टीका सहित, गीता प्रेस, गोरखपुर

3.10 बोध प्रश्न

1. अष्टवसुओं का वर्णन कीजिए। ये प्रकृति के तत्त्व हैं इस कथन को स्पष्ट करिये।
2. अष्ट वसुओं से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
3. अष्टवसुओं के राजा के गुणों का वर्णन कीजिए। श्रीकृष्ण ने इसे गीता में अपनी विभूति कहा उसके क्या कारण हैं?
4. एकादश रुद्रों का वर्णन कीजिए।
5. ''एकादश रुद्रों में शंकर मेरी विभूति हैं।'' श्रीकृष्ण इस कथन को समझाइय। किन गुणों के कारण वे रुद्रों के राजा बनें?
6. अष्टवसु तथा एकादश रुद्र की क्या–क्या प्रमुख विभूतियाँ हैं? इनसे आपको क्या शिक्षा मिलती हैं?